ॐ
श्री विश्वकर्मा महिमा दर्शन
पद्यात्मक काव्य
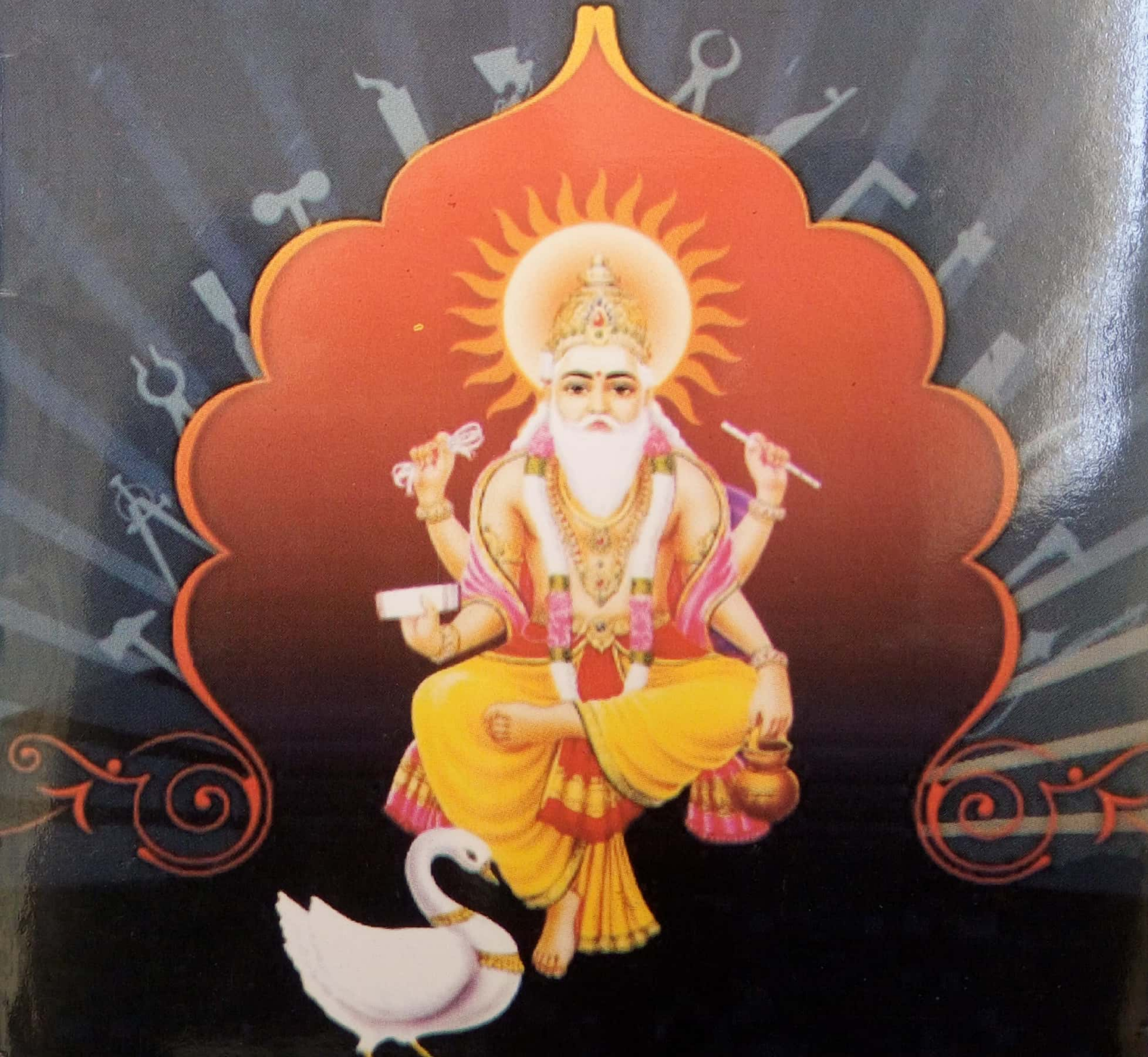
तत्त्वदर्शी स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज
श्रीमहन्त : उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर (राज.)

ॐ

श्री विश्वकर्मा महिमा दर्शन

(संगीतमय पद्यात्म काव्य भजन)

रचयिता

दर्जनाधिक्य संत-साहित्य, शास्त्रों के प्रणेता एवं संग्रहिता

तत्त्वदर्शी स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'

(धर्मवारिधि, कविभूषण, विद्यावाचस्पति, साहित्य-शास्त्री, रामायणाचार्य)

श्री महन्त - उतम आश्रम (आचार्य पीठ) कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर

उत्तम प्रकाशन

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342 006

दूरभाष (0291) 2547024, मोबा. 94144 18155

❖ **प्रकाशक :**
वास्ते उत्तम प्रकाशन जोधपुर
पूनमचन्द सुथार/श्री बेगाराम जी कुलरिया
V.P.O. सुरनाणा, तहसील लुनकरणसर,
जिला बीकानेर-334603 (राजस्थान)
मो.9680747169

❖ प्रथम पुष्प : 2018 वि. सं. : 2075

❖ पुनर्प्रकाशन सेवा : दस रुपैये मात्र (10.00)

❖ टाइपसेटिंग :
उत्तम कम्प्यूटर, जोधपुर
Mob. : 94605-90474

मुद्रक :
हिंगलाज ऑफसेट प्रिंटर्स
जोधपुर

श्यामानन लेखनी से...✍

अपनी बात

विश्वकर्मा विश्वेश्वर है, कला कर्म या काम।
रामप्रकाश वन्दन करें, रमता पुरुष श्री राम॥

उतम भारत में सृष्टि रचयिता एवं पोषण वृत्ति के निमितोपादान बिना मानवता का संसार शून्य सा प्रतीत होता। ऐसे समय में धर्म के मूल अर्थ की प्रधानता में सहायक विश्व की सर्व कला कारीगरी के आदि सृजेता श्रीविश्वकर्माजी ने अनेक प्रकार की उद्योग प्रधानता प्रदर्शित की जो सृष्टि के आद्योपांत में त्रयकाल उपादेयता का समीचीन दर्शक है। उतम प्रकाशन के विश्वकर्मा कला दर्शन जैसे ऐतिहासिक महिमा मण्डन के अनेक ग्रान्थों का सृजन हुआ, किन्तु अद्यावद्धि पर्यन्त पद्यात्मक संगीतमय कोई रचना श्रवणित नहीं हुई।

ऐसे भाव को लेकर सत्संग प्रेमी भजन गायक श्री

पूनमचन्द सुथार (कुलरिया) की प्रबल उत्कण्ठा की प्रार्थित पूर्ति में प्रस्तुत भाव पुष्प को भगवदार्पण किया गया लघु प्रयास है।

आशान्वित है कि उपासक भक्तों की मनोकामना पूर्ति में विश्वकर्मा भगवान सहायक होंगे, इसमे हमारा प्रयास कितना सफल रहा ? यह कर्णापाटव से रही अशुद्धियों में पाठक बन्धु उदारता का परिचय देते हुए सुधार कर लाभ उठायेंगे।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति पण्डिताः॥

सद्गुरु चरणाम्बुज चञ्चरीक
सन्त रामप्रकाशाचार्य "अच्युत"

उतम आश्रम, जोधपुर -6
गुरु पूर्णिमा, वि.सं. 2075

विषय सूची

(अनुप्रास—दोहा छन्द)

विश्वकर्मा विश्वेश है, कला कर्म या काम।
रामप्रकाश वन्दन करे, रमता पुरुष श्रीराम॥१॥

हरिराम हरी हर गुरु, सदा विष्णु विसराम।
रामप्रकाश प्रणम कर, परसे पद अभिराम॥२॥

फकर फकीरी मति फुरे, अनुभव कथ अवधूत।
कोविद हित कथनी करे, करता नकल कपूत॥३॥

दो रुपये में दोहरा, छके पञ्जे छन्द।
कलि में बेचत फिरत कवि, मोल लेत मति मन्द॥४॥

साधन साधे सूरमा, अनुभव फकर अवधूत।
अर्थ कल्पे जन अल्पता, कथनी करत कपूत॥५॥

विश्वकर्मा के विश्व की, महिमा मुहूर्त महान।
शंका मिटावे सर्व शिव, करत परम कल्यान॥५॥

(अन्त्यानुप्रास—दोहा छन्द)

अधिक लिखे अनुपम लिखे, वह मेरा गुरुदेव।
मो सम कहे सो भ्रात है, नकली लखे न भेव॥६॥

भजन (1)

राग आसावरी, पद संगीत

वार वार हूँ बलिहारी।
विश्वकर्मा भगवान जगत के, पूरण समर्थ अवतारी ।। टेर ।।
मानव समाज को दुःखी देख कर, सारी कला पसारी।
तन मन सुखी सकल भंडारी, दुःख से जगत उभारी ।।1।।
पुराण अठारह गुण को गावे, कथे वेद गुण चारी।
चौसठ कला और ललित कला में, भेद कियो विस्तारी ।।2।।
पांचों पुत्रों ने चारों युग में, जन मन में कर उपकारी।
युग युग में महिमा अमर है, धन धन है धनकारी ।।3।।
संत भगत गुण गावे सबही, पूजा करे सब नर नारी।
रामप्रकाश प्रणाम करत है, गुण गावत ही सब हारी ।।4।।

भजन (2)

राग आसावरी पद संगीत

मैं वार वार हूँ बलिहारी।
विश्वकर्मा भगवान जगत के, पूरण समर्थ अवतारी ।।टेर ।।
मानव समाज को दुःखी देख कर, सारी कला पसारी।
तन मन सुखी सकल भंडारी, दुःख से जगत उभारी ।।1।।

पुराण अठारह गुण को गावे, कथे वेद गुण चारी।
चौसठ कला और ललित कला में, भेद कियो विस्तारी ॥2॥
पांचों पुत्रों ने चारों युग में, जन मन में कर उपकारी।
युग युग में महिमा अमर है, धन धन है धनकारी ॥3॥
संत भगत गुण गावे सबही, पूजा करे सब नर नारी।
रामप्रकाश प्रणाम करत है, गुण गावत ही सब हारी ॥4॥

भजन (3)

राग आसावरी पद संगीत

जय विश्वकर्मा गुण ज्ञानी।
परमार्थ कारण कला पसारी, जग सारे जानी ॥ टेर ॥
चारों युग में चार वेद में, कथा कथ गानी।
लंका द्वारिका सुदामा नगरी, रचना अजब निर्मानी ॥1॥
ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु तुम्हीं, सर्व देव मय आनी।
तेरी माया बिन सूना सब ही, कला आप परमानी ॥2॥
कला कारीगिरी तेरी माया, परमार्थ पानी।
मिस्त्री कारीगर गजधर ध्यावे, पूजा करें मन मानी ॥3॥
पांचों पुत्र हैं समर्थ सारे, सर्व कलाविद् वानी।
स्वामी अंतर्यामी तुम ही, वेद भेद गुण खानी ।4॥

सोना ताम्बा लकड़ी लोहा, पत्थर धातु कल कानी।
रामप्रकाश प्रणाम करें यों, गावत गुण हर्षानी ॥5॥

भजन (4)

राग आसावरी पद संगीत

धन्य धन्य विश्वकर्मा ज्ञानी।
विश्व प्रशिद्ध कला कर्म में, महा समर्थ ध्यानी ॥टेर॥
शिल्पाचार्य वैज्ञानिक पूरण, भवन वास्तु मानी।
पांचों शिष्य चौंसठ कला में, ललित रूप जानी ॥1॥
सतयुग में स्वर्ण गज सें, नगर अमरावती आनी।
त्रेतायुग में चांदी के गज से, लंका नगरी परमानी ॥2॥
द्वापुर में ताम्र बांस से, द्वारिका नगरी ठानी।
कलियुग में लोहा लकड़ी से, चौंसठ कला गानी ॥3॥
वेद भेद से सब विस्तारी, आनन्द कला छानी।
'रामप्रकाश' है समर्थ स्वामी, विश्वकर्मा गुण खानी ॥4॥

भजन (5)

राग आसावरी पद संगीत

धन विश्वकर्मा बलकारी।
कला कृति के प्रेरक धारक, गुण गावत है जग सारी ॥टेर ॥

जग जीवन था कला बिन सूना, दिया ज्ञान अपारी।
मन्त्र द्रष्टा वे शिल्प प्रवर्तक, गुण ज्ञान भण्डारी ॥1॥
पांचों पुत्र कला विद पूरे, परम महा उपकारी।
छत्तीस इंची गज विस्तारे, छत्तीस औजार अधारी॥2॥
हंस वाहन सुहावन चव युग, गज में जग विस्तारी।
सर्व धातु परीक्षक पोषक, विद्या परम प्रचारी ॥3॥
स्थापत्य मूर्ति चित्र काव्य भी, संगीत कला विस्तारी।
अंगिरा पाराशर कौशिक भृगु, जैमिनी कला शिष्य वारी ॥4 ॥
चारों युग में चारों वेद में, गुण गावत संसारी।
'रामप्रकाश' प्रणाम नित्य ही, समर्थ की बलिहारी ॥5॥

भजन (6)

राग काफी पद संगीत

विश्वकर्मा गुण गाओ, हर्ष मनाओ, भेद बताओ ॥टेर ॥
अंगिरा, पाराशर, कौशिक, भृगु, जैमिनी, पांच शिष्य लाओ ॥1॥
कांच, सुलोचना, जयन्ति, करुणा, चंद्रिका कन्या बताओ ॥2॥
मनु, भय, त्वष्ठा, पत्र, सुवर्ण, जमाता पांच सुनाओ ॥3॥
सद्योजात, वामदेव, अघोरी, तत्पुरुष, ईशान पुत्र पाओ ॥4॥
'रामप्रकाश' विश्वकर्मा कुल भेद सारा समझाओ ॥5॥

भजन (7)

राग पारवा (छन्द भैरवी) पद संगीत

कहुं विश्वकर्मा गुण गायके, इतिहास देख लो भाई ॥टेर॥

ब्रह्मा विष्णु की शक्ति पूरी, मंत्र दृष्टा सब कला सबूरी।
पुत्र पांच शिष्य पंच बहूरी, सब जग को है सरसाय के।
जग चौंसठ कला फैलाई ॥1॥

हंस वाहन रंग श्वेत सुहाया, छत्तीस इंचि का गज बनाया।
जग में गुण कर्म कला को ताया, ललित कला वर लायके।
युग चार वेद गुण गाई ॥2॥

शिल्प कला आचार्य आदी, स्थापत्य कला को खूब फैला दी।
काव्य चित्र संगीत अनादी, सब धातु ज्ञान बता के।
जग उपकार सदाई ॥3॥

रामप्रकाश संत गुण गावे, कला दर्शन यह खोल बतावे।
शास्त्र पुराण सदा सरसावे, सब पूजे कलाविद् आयके।
जय विश्वकर्मा गुण गाई ॥4॥

भजन (8)

राग पारवा (छन्द भैरवी) पद संगीत

श्री विश्वकर्मा महाराज की, मैं लीला कथ के गाता हूं॥ टेर॥

जग की रचना देख अजूबी, उद्योग बिना सब सूनी खूबी।
जीवन जीना भारी रूबी, तब रची कलाऐं साज की।
सब के मन को भाता हूं ।। 1।।
पांच कला कारीगर जाने, शास्त्र संत सब भेद बखाने।
पांच पुत्र जग सारा माने, पांच कन्या है राज की।
जमाता पांच जताता हूं ।।2।।
बिना उद्योग काम कुछ नाही, जग की रचना सूनी वाही।
सुन्दरता है जीवन जाही, ब्रह्मा विष्णु गणराज की।
सांची सोच जचाता हूं ।।3।।
'रामप्रकाश' गुण सब ही गावे, विधि विधान वेद बतलावे।
विश्वकर्मा की महिमा भावे, शोभा भई समाज की।
गुण भाव श्रेष्ठ बताता हूं ।।4।।

भजन (9)

राग पारवा (छन्द भैरवी) पद संगीत

मन में नित हर्ष मनाय के, गुण विश्वकर्मा के गाओ ।।टेर।।
स्थापत्य में पत्थर चूना, भवन कूआ ईंट का भूना।
रचनाकार आदि का जूना, कला आचार्य कहाय के।
कारीगर हर्ष मनाओ ।।1।।

मूर्ति कला में धातु सारी, सोना पीतल ताम्बा धारी।
कागज पत्थर लकड़ी वारी, लोहा सकल बनाय के।
कला अलग फैलाओ ॥2॥
चित्रकला रंग भरो अनेकों, काला पीला लाल हरेकों।
प्राकृतिक पांचों तत्व भनेकों, मिश्रण रंग मिलाय के।
यश रु अर्थ कमाओ ॥3॥
संगीत कला में राग उचारो, नाना साज सतार संभारो।
स्वर ताल रु अर्थ विचारो, वर्णाक्षर काव्य सजाय के।
छन्द शास्त्र भेद को पाओ ॥4॥
पांच कला केआचार्य आदी, सृष्टि भेद का ज्ञान अनादी।
'रामप्रकाश' गुण गावे गादी, जग रचना अजब रचाय के।
सब आनन्द मौद मनाओ ॥5॥

भजन (10)
राग पारवा (छन्द भैरवी) पद संगीत

कोई देखो भाई बुद्धि लगाय के, विश्वकर्मा कला विचारो ॥टेर ॥
विश्वकर्मा की महिमा भारी, कारीगर के है इष्ट महारी।
पढो विज्ञान इंजिनियरिंग सारी, समझे कोई बुद्धि जचाय के।
सामयिकता सोच सुधारो ॥1॥

सतयुग त्रेता द्वापुर बीता, कला बिना नर रह गया रीता।
इष्ट राख कारीगर जीता, युक्ति भुक्ति पाय के।
जग पाये पदार्थ चारो ॥2॥
जग में कला कारीगरी जेती, विश्वकर्मा की विद्या तेती।
साज समाज मजदूरी खेती, कोई जाने सज्जन आय के।
देखत है जग सारो ॥3॥
'रामप्रकाश' गुण गावे सदाई, विश्वकर्मा ने कला उपाई।
यन्त्र मन्त्र ओ तन्त्र कहाई, कर्म ही कला बताय के।
महिमा जग विस्तारो ॥4॥

भजन (11)
राग पारवा (छन्द भैरवी) पद संगीत

गुण विश्वकर्मा के गाय के, कोई देखो भाग जगाई ॥टेर॥
कारीगर जगत के जैते, नक्सा नवीस इंजिनियरिंग तेते।
विश्वकर्मा इष्ट गुण वेते, सब ध्यावे चित लगाय के।
वह पावत है फल भाई ॥1॥
कला बिना नर पसु समाना, मूर्ख दुःख उठावे नाना।
पुरुषार्थ बिन फिरे बेगाना, विश्वकर्मा भाग जगाय के।
कर महनत भाग बनाई ॥2॥

कर्म कारीगर भाग जगावे, विश्वकर्मा सब कला सिखावे।
चौंसठ कला सब विद्या भावे, हुनर के गुरु कहाय के।
इष्ट माने सो पद पाई ॥3॥
विश्वकर्मा की महिमा गावे, 'रामप्रकाश' सहजे पद पावे।
कारीगरी हृदय में आवे, उर का अज्ञान हटाय के।
कोई समझे युक्ति गाई ॥4॥

भजन (12)
राग पारवा (छन्द भैरवी)

मन में नित हर्ष मनाय के, गुण विश्वकर्मा के गाओ ॥ टेर ॥
स्थापत्य में पत्थर चूना, भवन कुआ ईंट का भूना।
रचनाकार आदि का जूना, कला आचार्य कहाय के।
कारीगर हर्ष मनाओ ॥1॥
मूर्ति कला में धातु सारी, सोना पीतल ताम्बा धारी,
कागज पत्थर लकड़ी वारी, लोहा सकल बनाय के।
कला अलग फैलाओ ॥2॥
चित्रकला रंग भरो अनेकों, काला पीला लाल हरेकों।
प्राकृतिक पांचों तत्व भनेकों, मिश्रण रंग मिलाय के।
यश रु अर्थ कमाओ ॥3॥

संगीत कला में राग उचारो, नाना साज सतार संभारो।
स्वर ताल रु अर्थ विचारो, वर्णाक्षर काव्य सजाय के।
छन्द शास्त्र भेद को पाओ ॥4॥
पांच कला केआचार्य आदी, सृष्ठी भेद का ज्ञान अनादी।
रामप्रकाश गुण गावे गादी, जग रचना अजब रचाय के।
सब आनन्द मौद्रिक मनाओ ॥5॥

***

भजन - राग लावणी तर्ज कवाली

धन धन मस्त फकीरी पाई, पहन फकीरी चोला है।
गुरुकृपा अलमस्ती आई, लिया सन्तन का ओला है।टेर॥
चोले कईक पाकर त्यागे, चौरासी लख घोला है।
सर्व गुणों का पाया नहीं तब, चित में भया विनोला है॥१॥
लम्बा-छोटा-मोटा होता, चद्दर चोला पोला है।
पहनूँ ओढूँ चाहै बिछाऊँ, सभी काम में सोला है॥२॥
नक्षत्र तिथि ग्रह करण योग से, चोला बना अमोला है।
परम पचांग हाथ पाँव सिर सो, भेद गुरु गम खोला है॥३॥

परा अपरा के मांही बुनिया, त्रिगुण तत्त्व तन गोला है।
उपनिषद् माला गुण कर से, गुरु गुण पाया झोला है।।४।।
राधाकृष्ण मय चोला है, यह सीताराम से तोला है।
ब्रह्म आप है मुक्ति स्वरूप सो, अष्ठोत्तर से धोला है।।५।।
ज्ञान विज्ञान युक्ति जग-भुक्ति, गुरु-भक्ति से बोला है।
उक्ति युक्ति के सब गुण पूर्ण, लखे नहीं जग भोला है।।६।।
लख कर पावे सत कमावे, बिना लखे बहु रोला है।
"रामप्रकाश" उत्तम गुरु धोया, ताप पाप कर होला है।।७।।

***

इन्दव छन्द

विश्वकर्मा गुण गान करे वह, पावत धर्म रु अर्थ सदाई।
गणपति सूरज शक्ति विष्णु हर, विश्वकर्मा सब एक समाई।।
कामना पूरण काम कमावत, परम उद्योग सदा सुख पाई।
'रामप्रकाश' युग लोक सुहावन, विश्वेश्वर केपद पावत भाई।। 1।।

महिमा गावत सो फल पावत, पाप रु ताप हरे दुःख सारा।
काम रु धाम सो नाम उजागर, ऋद्धि सिद्धि वर पावत प्यारा।।

अन्नदाता उद्योग बढ़ावत, धन धनी वर वरिष्ठ सुखारा।
'रामप्रकाश' वो भक्ति रु शक्ति से, पूरण रुप भरे भण्डारा ॥2॥

आवत जावत गावत है गुण, पावत भक्ति की शक्ति अपारा।
शास्त्र वेद बखानत है यश, विश्वकर्मा गुण ज्ञान भण्डारा ॥
भ्रम अज्ञान मिटे मन के दुःख, तन सुखी धन पावत प्यारा।
'रामप्रकाश' जो इष्ठ निभावत, वही कारीगर है मतवारा ॥3॥

प्रथम वन्दन गुरु वर उतम, विश्वकर्मा गुण ज्ञान भण्डारा।
ऋद्धि रु सिद्धि कला सुख पूर्ण, मोद बढावत बुद्धि अपारा ॥
भक्त को नूतन बोद्ध उपावत, यश ऐश्वर्य धन प्रेम पूजारा।
'रामप्रकाश' जो ध्यावत है वह पावत है, नित परम स्नेह निभावणहारा ॥4॥

दोहा

आयु, धन रु वर्ण विद्या, आश्रम धर्म महान।
'रामप्रकाश' षट् ते महा, ब्रह्म ज्ञानी विद्वान ॥5॥
विश्वकर्मा गुरु उत्तम में, छहों वृद्धत्व महान।
'रामप्रकाश' पूजित महा, ज्ञान रु ध्यान जहान ॥6॥

***

दम्भ प्रताड़न यष्टिका

गुरुजी मेटो भ्रम हमारा ।
हो शिष्य शंका कहो सांची, संशय दूर हो सारा ।।टेर।।
छड़ी छत्र सिक्का ये लेते, कण्ठी तिलक सुधारा ।
क्या यह भक्ति के संगी, साधन साध्य विचारा ।।1।।
चना भाव से महन्त बेचते, लेवें दम्भी मारा ।
लोक ठगने की युक्ति सारी, भक्ति बाधक प्यारा ।।2।।
साधन बिना राजा की शोभा, नियम बिन साधु धारा ।
छड़ी छत्र के नियम बताओ, नहीं जाने संसारा ।।3।।
सात अंग हो साधन जाके, भूप वहीं मतवारा ।
सात अंग है छड़ी छत्र के, सिक्का भेद अपारा ।।4।।
गुरुधर्म सम्प्रदाय नियम को, सामाजिक भेद निहारा।
गुरु ज्ञान में समर्थ हो गुरु मुख, वह पावे अधिकारा ।।5 ।।
प्राचीन अर्वाचीन आई, श्री युत अग्रद्वारा।
दम्भ प्रताड़न यष्टिका येही, शिक्षा दे इकसारा ।।6।।
राजगुरु 'हरिराम' वैरागी, पधरावणि के द्वारा ।
'रामप्रकाश' अनुचर पाई, गुरु पीढ़ियों अनुसारा ।।5।।

विश्वकर्मा अष्टोत्तरशत नामावली

१. श्री विश्वकर्मणे नमः
२ श्री विश्वात्मने नमः
३. श्री विश्वरूपाय नमः
४ श्री विश्वाधाराय नमः
५. श्री विश्वधर्माय नमः
६ श्री विरजे नमः
७. श्री विश्वेश्वराय नमः
८ श्री विश्ववल्लभाय नमः
९. श्री विष्णवे नमः
१०. श्री त्रिनेत्राय नमः
११. श्री कंबीधराय नमः
१२. श्री ज्ञानसूत्राय नमः
१३. श्री सूत्रात्मने नमः
१४. श्री सूत्रधराय नमः
१५. श्री विश्ववराय नमः
१६. श्री विश्वकराय नमः
१७. श्री चतुर्भुजाय नमः
१८. श्री पंचवक्त्राय नमः
१९. श्री पूर्णानन्दाय नमः
२०. श्री सानन्दाय नमः
२१. श्री सर्वेश्वराय नमः
२२. श्री परमेश्वराय नमः
२३. श्री तेजात्मने नमः
२४. श्री परमात्मने नमः
२५. श्री कृतिपतये नमः
२६. श्री बृहद्रूपाय नमः
२७. श्री ब्रह्माण्डाय नमः
२८. श्री भुवनपतये नमः
२९. श्री त्रिभुवनाय नमः
३०. श्री वास्तोष्पतये नमः
३१. श्री सनातनाय नमः
३२. श्री सर्वादये नमः
३३. श्री कर्षपाय नमः
३४. श्री हर्षाय नमः
३५. श्री सुखकर्त्रे नमः
३६. श्री दुःखहर्त्रे नमः

३७. श्री देवाय नमः
३८. श्री अनन्ताय नमः
३९. श्री अन्ताय नमः
४०. श्री विश्वम्भराय नमः
४१. श्री कर्मिणे नमः
४२. श्री धर्मिणे नमः
४३. श्री धीराय नमः
४४. श्री धराय नमः
४५. श्री आत्मने नमः
४६. श्री परात्मने नमः
४७. श्री पुरुषाय नमः
४८. श्री धर्मात्मने नमः
४९. श्री वरदाय नमः
५० श्री श्वेतांगाय नमः
५१. श्री श्वेतवस्त्राय नमः
५२. श्री हंसवाहनाय नमः
५३. श्री त्रिगुणात्मने नमः
५४. श्री विश्वेशाधिपतये नमः
५५. श्री सत्यात्मने नमः
५६. श्री गुणवल्लभाय नमः
५७. श्री भूकल्पाय नमः
५८. श्री भूलोकाय नमः
५९. श्री भुवर्लोकाय नमः
६०. श्री स्वर्गलोकाय नमः
६१. श्री महोलोकाय नमः
६२. श्री जनलोकाय नमः
६३. श्री तपोलोकाय नमः
६४. श्री सत्यलोकाय नमः
६५. श्री अतलाय नमः
६६. श्री वितलायनमः
६७. श्री सुतलाय नमः
६८. श्री तलातलाय नमः
६९. श्री महतलाय नमः
७०. श्री रसातलाय नमः
७१. श्री पातालाय नमः
७२. श्री आद्यात्मने नमः
७३. श्री विशंभुजाय नमः
७४. श्री मनुरूपिणे नमः

७५. श्री त्वष्ट्रे नमः
७६. श्री दैवेज्ञाय नमः
७७. श्री पूर्णप्रभाय नमः
७८. श्री विश्वव्यापिने नमः
७९. श्री हृदयवासिने नमः
८०. श्री स्थानवासिने नमः
८१. श्री दुष्टदमनाय नमः
८२. श्री देवधराय नमः
८३. श्री वासपात्रे नमः
८४. श्री स्थिरकराय नमः
८५. श्री अनन्तमुखाय नमः
८६. श्री अनन्तभुजाय नमः
८७. श्री अनन्तचक्षुषे नमः
८८. श्री अनन्तपदाय नमः
८९. श्री अनन्तकल्पाय नमः
९०. श्री अनन्तशक्तिभृते नमः
९१. श्री अतिसूक्ष्माय नमः
९२. श्री निर्विकल्पाय नमः
९३. श्री निर्विघ्नाय नमः
९४. श्री निरूपाय नमः
९५. श्री निराधाराय नमः
९६. श्री निराकाराय नमः
९७. श्री महादुर्लभाय नमः
९८. श्री निर्मोहाय नमः
९९. श्री शान्तमूर्तये नमः
१००. श्री शान्तिदात्रे नमः
१०१. श्री मोक्षदात्रे नमः
१०२. श्री स्थिविराय नमः
१०३. श्री सूक्ष्माय नमः
१०४. श्री निर्मोहाय नमः
१०५. श्री विश्वरक्षकाय नमः
१०६. श्री धराधराय नमः
१०७. श्री स्थितिरूपाय नमः
१०८. श्री विश्वव्यापिने नमः

॥ इति श्री विश्वकर्मा अष्टोत्तरशत नामावली सम्पूर्ण ॥

जन्म-मरण का कारण

कर्त्ता रु भर्त्ता अज्ञान कारण सो, परोक्ष अपरोक्ष ये चार संजोई।
हर्ष रु शोक अस्तवापादक, अभाना पादक तीन ये जोई॥
अवस्था सात ये चिदाभास की, सूक्ष्म तन में जाय मिलोई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शस्त्र, जन्म रु मरण को कारण योई॥1॥

ज्ञान इन्द्रिय रु अन्त:करण नव, सृष्टि सत्तोगुण जान ये भाई।
कर्म इन्द्रिय रु पंचक प्राण ही, सृष्टि रजोगुण मिले है आई॥
अवस्था सात मिले चिदाभास ये, कारण देह जा सूक्ष्म समाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई॥2॥

दोय अज्ञान की शक्ति है एक ही, असत्वा-अभान आवर्ण भाई।
हर्ष रु शोक कर्त्ता रु भर्त्ता अहं, परोक्ष अपरोक्ष ये छहों कहाई॥
कारण देह भयो इहि भाति से, सत्तो-रजो संग जाय मिलाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई॥3॥

सत्तोगुण और मिले रजोगुण, सूक्ष्म तन बन्यो यह गाई।
देह अज्ञान है चिदाभास सो, तमो मिले पंच तत्त्व सदाई॥
कारण देह बन्यो दोई भाति से, स्थूल रु सूक्ष्म तमोगुण थाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई॥4॥

ब्रह्म स्वरूप कुटस्थ माया संग, ताहि ते अभास मिल्या चित्त जाई।
प्राकृत तमो अविद्या मिल आवर्ण, सो चिदाभास है जाय मिलाई॥

मिले रजो सत्तो सो सूक्ष्म, कारण सो चिदाभास अथाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ।।5 ।।

कारण अज्ञान भयो चिदाभास सो, अवस्था सात हूँ संगले आई।
सात्विक सृष्टि नौ गुण सूक्ष्म, ज्ञान इन्द्रिय रु अन्तःकरण ताई ।।
सूक्ष्म सात्विक दर्पण भाति में, भयो प्रभावित कारण भाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ।।6 ।।

ज्ञान-कर्म इन्द्रिय पंचक प्राण हूँ, अन्तःकरण में वासना थाई।
अवस्था सात है चिदाभास ते, कर्म संगति आगामी मिलाई ।।
मिली तन्मात्रा चंचल हो इमि, योग याहि संयोग कहाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ।।7 ।।

सतो-रजो सूक्ष्म तन माहि है, सहित सामग्री मेल मिलाई।
कारण तन है चिदाभास जु, अवस्था सात मिले जब आई ।।
स्थूल तमो तन होय सूक्ष्म जु, तीन मिले-बिछुरे जब धाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ।।8 ।।

सतो-रजो गुण हो विशिष्ट जु, सूक्ष्म देह कहै जन ताई।
अविद्या रूप ये है चिदाभास ही, अवस्था सात ले साथ में आई ।।
याही कहत वेदान्त सो जीव है, होय ब्रह्म अज्ञान विलाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ।।9 ।।

कर्म स्वरूप भये दुहु आवर्ण, असत्वा-अभान की शक्ति कहाई।
परोक्ष अपरोक्ष रु हर्ष है शोक जु, कर्त्ता रु भर्त्ता सो अवस्था है आई ।।

कारण शरीर भयो सब कारण, सूक्ष्म देह में आय मिलाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ॥10 ॥

कर्म को कारण अहै अज्ञान जु, ताहि प्रभाव भये षट् भाई।
परोक्ष-अपरोक्ष रु है हर्ष शोक जु, कर्त्ता भर्त्ता यहि जान ले ताई॥
सो चित्त माहि भयो चिदाभास जु, याहि ते चेतन भ्रम भुलाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ॥11 ॥

है चिदाभास वही चिद् चेतन, अवस्था साथ वही जड़ ताई।
सात्विक सृष्टि माया गुण सात्विक, राजस माया गुण तामस भाई॥
तामस अज्ञान अवस्था सात हूँ, चेतन माहि सो जाय समाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ॥12 ॥

जो ब्रह्माश्रित महत्त्व प्रकृति सो, होय वो त्रिगुण माया दरशाई।
सतो रजो माया दुहु भाति सो, सात्विक रूप अहै चित्त ताई॥
तमो माया जड़ रूप दुहु विधि, अन्तर बाहर रूप लखाई।
'रामप्रकाश' कहै सन्त शास्त्र, जन्म रु मरण को कारण याई ॥13 ॥

तमो माया अपरा पंच स्थूल जु, छाय रही जग रूप कहाई।
रजो माया अपरा वह सूक्ष्म, सो चिदाभास के रूप में आई॥
जाय सतो परा पर चित्त में, रजो सहित में जाय समाई।
'रामप्रकाश' यही चिद् जड़ ग्रथि सो, जन्म रु मरण को कारण याई॥14॥

सूर्य समान अहै सच्चिदानन्द, सो नित आप निर्लेप रहाई।
रश्मि ताहि सो जाय के सात्विक, दर्पण चित्त के माहि समाई॥

प्राकृतिक बीच मिले अणु तामस, त्रिगुण माया को खेल रचाई।
'रामप्रकाश' यही चिद् जड़ ग्रथि सो, जन्म रु मरण को कारण याई॥15॥

प्राकृतिक अणु मिले गुण तासस, सूक्ष्म रूप चिदाभास में आई।
वही अवस्था सात हूँ होय के, कर्त्ता रु भर्त्ता है आवर्ण वाई॥
हर्ष रु शोक जु परोक्ष अपरोक्ष है, अविद्या तम अज्ञान सो थाई।
'रामप्रकाश' यही चिद् जड़ ग्रथि सो, जन्म रु मरण को कारण याई॥16॥

चेतन रूप है निष्प्रह आपही, सूर्य-रश्मि दृष्टान्त सुहाई।
रश्मि ही चिद् स्वरूप अनूप ही, सतो अन्त: आभास अथाई॥
सोई कुटस्थ मिल्यो तत पूर्ण, परा माया चिदाभास समाई।
'रामप्रकाश' वेदान्त बखानत, जन्म रु मरण को कारण याई॥17॥

परात माटी तन भरा जल पूर्ण, अन्त:करण ज्यों चेतन छाई।
ताहि में सूर्य भयो प्रति बिम्बत, रवि सदा निर्लेप अथाई॥
सीतल उष्ण होवे जल तरंग में, हर्ष रु शोक भयो बिम्ब मांई।
'रामप्रकाश' ज्ञानी जन जानत, जन्म रु मरण को कारण याई॥18॥

सत चित आनन्द ब्रह्म है पूरण, माया विशिष्ट वह ईश्वर थाई।
वही अविद्या विशिष्ट जीव ही, अन्त: आभास प्रमा कहलाई॥
वृत्ति प्रमाण प्रमेय वह चेतन, प्रमाता रूप हो वस्तु समाई।
'रामप्रकाश' ये चेतन सात हो, जन्म रु मरण को कारण याई॥19॥

अन्त:करण चिदाभास है चेतन, वृत्ति जन्य प्रमादिक भाई।
जीव रु ईश्वर माया जनित हो, सात्विक तामस रूप कहाई॥

छहों अपरमार्थ चेतन लय हो, एक अनन्त सो ब्रह्म रहाई।
'रामप्रकाश' परमार्थ कूटस्थ सो, निष्प्रह है निर्लेप सदाई ॥20॥

ब्रह्म माया सम्बन्ध ब्रह्माश्रित, ताहि ते सत्य स्वंरूप लखाई।
चंचल परिवर्तन माया स्वभाव जु, प्रकृति महतत्त्व भेद बताई॥
वही अपरा अवस्तु सामान्य है, त्रिगुण रूप से भाव फैलाई।
भयो विकार परा अपरा मिल, 'रामप्रकाश' यह जान ले भाई॥21॥

परमार्थ अपरमार्थ मिले जड़ चेतन, वस्तु अवस्तु भयो जग ताई।
सत के साथ असत हो दीखत, यही प्रपंच को दृश्य दिखाई॥
परा है सात्विक अपरा तामस, माया अविद्या अनूप कहाई।
सत असत सों आप विलक्षण, 'रामप्रकाश' अनिर्वचनीय आई॥22॥

माया ब्रह्माश्रित है सत रूप ही, नाहि वह चेतन आनन्द रूपा।
जीव है परा अपरा मिल चेतन, वही सत चेतन परम स्वरूपा॥
ब्रह्म परमानन्द सत चित्त आनन्द, परम विशेषण एक अनूपा।
'रामप्रकाश' यही चिद्जड़ ग्रन्थि है, जानत होय परमानन्द भूपा॥23॥

ब्रह्म-माया सम्बन्ध ब्रह्माश्रित, यही जड़-चेतन मेल स्वरूपा।
महतत्त्व प्रकृति होय के त्रिगुण, कूटस्थ-आभास हो जग अनूपा॥
परा अपरा प्रपंच में सत है, यही सामान्य चेतन चूपा।
'रामप्रकाश' यही चिद्जड़ ग्रन्थि है, विषय गूढ अतिशय गूपा॥24॥

ब्रह्म परमार्थ वस्तु स्वरूप है, सत चित्त आनन्द एक अनूपा।
विवृत्त रूप ब्रह्माश्रित प्रकृति हो, महतत्त्व को परिणाम स्वरूपा॥

वेद वेदान्त उपनिषद् भाखत, जानत गूढ हो आनन्द रूपा।
'रामप्रकाश' यही चिद्जड़ ग्रन्थि हो, भेद रु भ्रम भयो तद् भूपा ॥25॥

ब्रह्माश्रित प्रकृति विलास यही जग, प्रपंच माहि अनेक रचाई।
ब्रह्म को विवृत्त वही जग भाषत, प्रकृति परिणाम माया जग थाई॥
शास्त्र सन्त सिद्धान्त बतावत, सत असत को जान हूँ भाई।
जान परमार्थ त्याग अपरमार्थ, 'रामप्रकाश' अनूप अथाई ॥26॥

सात्विक राजस सृष्टि अदृष्टित, दृष्टित सृष्टि सो तामस मांई।
परा अदृष्ट है चेतन अंश सो, कूटस्थ वही चिदाभास कहाई॥
प्रपंच दृष्ट में मिले अदृष्टि ही, यही प्रपंच भयो जग ताई।
'रामप्रकाश' यहि मेल मिलावत, जीव रु ईश्वर को भेद बताई ॥27॥

जीव रु जीव को भेद अनन्त है, जीव रु ईश्वर त्रिगुण मांई।
जड़ जड़ भेद रु जीवन जड़ को, जड़ रु चेतन ईश कहाई॥
पांच हूँ भेद माया भ्रम जनित, जान गुरु मुख भेद मिटाई।
'रामप्रकाश' निष्ठा कर चेतन, भ्रांति सहित भ्रम मूल विलाई ॥28॥

ब्रह्माश्रित महतत्त्व प्रकृति ते, होय कूटस्थ अदृष्ट अमाई।
माया त्रिगुण को विकल्प मिल के, ईश्वर माया विशिष्ठ कहाई॥
वही कूटस्थ चिदाभास के संग में, मिलत अन्तः में जीव बताई।
त्रिगुण भाव रचे प्रपंच को, 'रामप्रकाश' ज्ञानी लखे ताई ॥29॥

— *सटीक श्री हरिसागर से उद्धृत*

***

गोकुल अष्टक

(1)

स्थूल रु सूक्ष्म कारण देह को, जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति वारो।
तीन अवस्था रु देश रु काल को, वस्तु परिच्छेद सुहावन कारो।।
प्राण मनो विज्ञान मिले त्रय, अन्न मय आनन्द कोश उजारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो।।

(2)

कारण करण रु धारण टारण, देह विदेह विडारण वारो।
व्यष्ठि समष्टी में अनव्य अव्यय, सत चित आनन्द परम उजारो।।
वही कुटस्थ रू है चिदाभासजु, ब्रह्म स्वरूप अनुप पसारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो।।

(3)

आदि रू अन्त के मध्य विराजत, आप अनादि सो एक अपारो।
नभ ते सूक्ष्म तेज प्रकाशक, वायु ते वेग है धावक प्यारो।।
जल ते कोमल अनन्त गुणाकर, वही प्रसारक कारक सारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो।।

(4)

देह रु इन्द्रिय प्राण अन्तःकरण, चित ही आप चेतावत सारो।
उत्पति स्थिति प्रलय पदार्थ, सोई अयथार्थ-यर्थाथ धारो।।
दृश्य सभी यह नाम रू रूप सों, है व्यतिरेक में अन्वय भारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो।।

(5)

सुख रू दुःख में जन्म रू मरण जु, हानि रू लाभ को द्वन्द असारो।
है निर्द्वन्द रू निष्प्रह आनन्द, अचल अखण्ड सो उजियारो।।

एक असीम अनन्त अगोचर, दृश्य अदृश्य ते अद्रष्ट अधारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जानन हारो॥

(6)

माया अविद्या की छाया ते दूर है, जन्म रु मरण से आप है न्यारो।
साक्षी असाक्षी अपेक्षा उपक्षेति, द्वैत अद्वैत को मूल उखारो॥
वाच्य रू लक्ष्य की नहीं वाचकता, गूँगे के गुड़ को आप उचारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो॥

(7)

पक्ष अपक्ष न दक्ष अदंक्ष न, लक्ष अलक्ष न लाल न कारो।
द्वैत अद्वैत न हार न जीत है, वाच्य अवाच्य न लक्ष्य लखारो॥
गोकुल गाँव को वासी है आप ही, जानत मानत अधिष्ठान उजारो।
'उत्तमरामप्रकाश' है चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो॥

(8)

जहित अजहति रू फल-वृति मय, व्याप्ति अव्याप्ति को भेद निवारो।
वही यथार्थ नहीं अयथार्थ, क्रिया अक्रिय न कर्म विचारो।
खण्ड-अखण्ड विखण्ड में आपही, नाम बेनाम अनाम उचारो।
'उत्तमरामप्रकाश' सो चेतन, गोकुल गाँव को जाननहारो॥

(दोहा छन्द)

जड़-मिथ्या माया सभी, गोकुल गांव शरीर।
द्रष्टा कुटस्थ चिदाभास में, व्यापक साक्षी मीर॥9॥
सच्चिदानन्द स्वरूप नित, ब्रह्म ही जाननहार।
ता भिन्न सब ही द्वैत है, ब्रह्मज्ञानी चित धार॥10॥

***

उत्तम प्रकाशन जोधपुर का लोकप्रिय जनोपयोगी साहित्य

आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र) सम्प्रदाय शोधग्रन्थ
सन्तदास अनुभव विलास (गुरु स्मृति पाठ)
हरिसागर (समस्त ज्ञानों का भण्डार) मूल एवं सटीक
वाणी प्रकाश (छ: सन्तों की वाणी)
अचलराम भजन प्रकाश (तीन साईज में)
उत्तमराम भजन प्रकाश
भारतीय समाज दर्शन
विश्वकर्मा कला दर्शन
नशा खण्डन दर्पण
रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह
रामायण मन्त्र उपासना
पिङ्गल रहस्य (छन्द विवेचन)
उत्तम बाल ज्योतिष दोहावलि (मूल एवं टीका)
रामप्रकाश शब्दावली (भजन एवं छन्द)
उत्तमराम अनुभव प्रकाश
रामप्रकाश शब्द सुधाकर (सचित्र) दो भाग
रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग) प्रश्नोत्तर भण्डार
उत्तम बाल योग रत्नावलि (तीन भाग)
सन्ध्या विज्ञान (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
सुगम चिकित्सा - प्रथम भाग (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
सुगम चिकित्सा - द्वितीय भाग (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
सुगम उपचार दर्शन
सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश (टीका सहित)

आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष (परिशिष्ट भाग)
स्वाध्याय वेदान्त दर्शन
रामप्रकाश भजन प्रभाकर (पाँच सौ भजन)
हिन्दू धर्म रहस्य (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
कामधेनु (गौ महिमा)
सर्वदर्शन वाद कोश
अचलराम ग्रन्थावली (1-4 भाग, टीका सहित)
वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन
रामदेव ब्रह्म पुराण
लोकदेवता बाबा रामदेव
अन्त्येष्टि संस्कार (शव यात्रा)
नासकेत गीता (टीका सहित)
टीका दर्पण - भजन टीका
अवधूत ज्ञान गीता दर्पण
नित्यपाठ - नव स्तोत्र
गोरख बोध वाणी संग्रह
अचलराम सैलाणी - टीका सहित

सम्पर्क करें —

उत्तम प्रकाशन

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342 006

दूरभाष (0291) 2547024, मोबा. 94144 18155
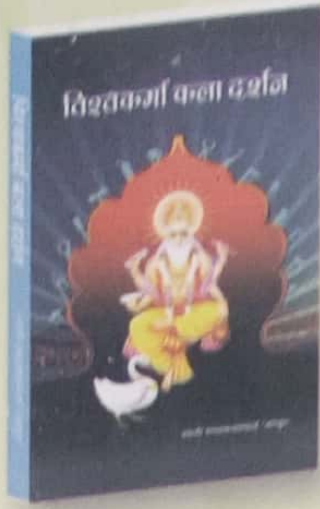
पूजा, मुहूर्त एवं कला के तीन अनुच्छेदों में विविध प्रकार से शिल्प कला का महत्त्व, गज के एक-एक इंची पर प्राकृतिक दैविक अंश कलाओं का निवास, गज को ग्रहण करने का विधान, समस्त कलाओं में काम आने वाले ३६ औजारों के नाम सहित राजमिस्त्रियों एवं शिल्प विद्यार्थियों के लिये अत्युपयोगी -

विश्वकर्मा कला दर्शन

लेखक -

स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342006

फोन : 0291-2547024, मो. 9414418155

E-mail: uttamashram@gmail.com

www.uttamashram.blogspot.com